Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar Madhubani
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com.

Fourth Noble Truth
(चतुर्थ आर्य सत्य)
(दुःख निरोध मार्ग)

बुद्ध ने चतुर्थ आर्य सत्य में दुःख निरोध के मार्ग का विस्तार से चर्चा किया है। यह मार्ग दुःख के कारणों को अन्त करने का मार्ग है। यह मार्ग प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला है। इसमें कोई भेदभाव नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वो सवर्ण हो या अवर्ण, धनी हो या गरीब हो सब इस मार्ग का अनुसरण करके निर्वाण प्राप्त कर सकते हैं। बुद्ध के चतुर्थ आर्य सत्य उनके धर्म एवं नीतिशास्त्र का आधार है। इस मार्ग को अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है क्योंकि इसमें आठ अंग है। ये निम्न हैं- (i) सम्यक् दृष्टि (ii) सम्यक् संकल्प (iii) सम्यक् वाक् (iv) सम्यक् कर्म (v) सम्यक् आजीविका (vi) सम्यक् व्यायाम (vii) सम्यक् स्मृति (viii) सम्यक् समाधि इनकी एक एक कर चर्चा करेंगे।

(i) सम्यक् दृष्टि :→ बुद्ध ने दुःख का मूल कारण अविद्या को माना है। अविद्या के कारण ही गलत दृष्टि का प्रादुर्भाव होता है, जिसके कारण अनित्य को नित्य, अवास्तविक को वास्तविक समझने लगते हैं। नश्वर संसार के दुःखमय अनुभव को सुखमय समझने लगते हैं। मिथ्या दृष्टि का अंत सम्यक् दृष्टि से ही संभव है। इस प्रकार जो वस्तु जिस प्रकार है उसको भली प्रकार समझना ही सम्यक् दृष्टि है। सम्यक् दृष्टि का अर्थ है बुद्ध के चार आर्य सत्यों का वास्तविक ज्ञान। इसी के द्वारा मनुष्य निर्वाण की ओर अग्रसर होता है।

Scanned with CamScanner

(ii) सम्यक् संकल्प :- सम्यक् दृष्टि का पहला रूप परिवर्तन सम्यक् संकल्प में होता है। बुद्ध के चार आर्य सत्यों का जीवन में पालन करने का निश्चय ही सम्यक् संकल्प है। चारों आर्य सत्यों पर दृष्टि रखते हुए मानव विषयों से अनासक्त होते हुए, राग, द्वेष, हिंसा के विचारों को त्याग करने का मानव जो संकल्प करता है उसे सम्यक् संकल्प कहते हैं। दूसरे शब्दों में जो अशुभ है उसे न करने का संकल्प ही सम्यक् संकल्प है। इसमें त्याग एवं परोपकार की भावना निहित है।

(iii) सम्यक् वाक् :- सम्यक् संकल्प की वाह्य अभिव्यक्ति सम्यक् वाक् है। सत्य एवं प्रिय वचन बोलना ही सम्यक् वाक् है। जिस वचन से दूसरे को कष्ट हो उसे परित्याग करना ही सम्यक् वाक् है। दूसरे को निन्दा करना, आवश्यकता से अधिक बोलना, झूठ बोलना सम्यक् वाक्य की विरोधी प्रकृति है। लोकसंगत भी सम्यक् वाक्य के लिए श्रेयस्कर नहीं है।

(iv) सम्यक् कर्म :- सम्यक् कर्म का तात्पर्य है बुरे कर्मों का परित्याग। बुद्ध के अनुसार बुरे कर्म तीन हैं:- हिंसा, स्तेय, इन्द्रियभोग। सम्यक् कर्म इन तीनों के विपरीत कर्म है। अहिंसा अर्थात दूसरे जीवों की हिंसा नहीं करना, अस्तेय अर्थात दूसरे के संपत्ति को नहीं चुराना, इन्द्रिय-संयम अर्थात इन्द्रिय सुख का त्याग करना ही सम्यक् कर्म है।

(v) सम्यक् आजीविका :- सम्यक् आजीविका का अर्थ है ईमानदारी से जीविकोपार्जन करना। धोखा, रिश्वत, लूट अत्याचार आदि से जीवन निर्वाह करना अनुचित है। जीवन निर्वाह के लिए गलत मार्ग एवं अनैतिक कार्य का सहारा लेना पाप है। निर्वाण की प्राप्ति के लिए कटु वचन एवं बुरे

Scanned with CamScanner

कर्मों के परित्याग के साथ-साथ जीवित निर्वाह के लिए अशुभ मार्ग का परित्याग भी आवश्यक है।

(vi) सम्यक् व्यायाम :- पुराने बुरे विचारों को मन से निकालना तथा नये बुरे विचारों को मन में आने से सम्यक् व्यायाम है। मन कभी शान्त नहीं रहता है। इसलिए सब को अच्छे भावों से परिपूर्ण रखना तथा अच्छे भावों को मन में बनाये रखने का प्रयत्न करना सम्यक् व्यायाम है। इसमें चार प्रकार के प्रयत्न हैं।

(i) पुराने बुरे विचारों को बाहर निकालना
(ii) नये बुरे विचारों को मन में आने से रोकना
(iii) अच्छे भावों को मन में भरना
(iv) इन भावों को मन में कायम रखने के लिए प्रयत्नशील रहना सम्यक् व्यायाम है। इस प्रकार सम्यक् व्यायाम उन क्रियाओं को कहते हैं जिनसे अशुभ मनःस्थिति का अन्त होता है तथा शुभ मनःस्थिति का प्रादुर्भाव होता है।

(vii) सम्यक् स्मृति :- सम्यक् स्मृति का तात्पर्य है वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप के संबंध में जागरूक रहना। जीवन विषयों का ज्ञात हो चुका है उनको निरंतर स्मरण रखना। निर्वाण की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को शरीर को शरीर, मन को मन, संवेदना को संवेदना समझना आवश्यक है। इसका अर्थ है शरीर, मन, संवेदना आदि को क्षणिक एवं दुःखदायी समझना चाहिए। इस प्रकार नाशवान वस्तुओं की स्मृति ही सम्यक् स्मृति है। इसके संपूर्ण पालन से ही मानव समाधि के योग्य बनता है।

(viii) सम्यक् समाधि :- उपरोक्त आठों मार्गों पर चलने के उपरांत निर्वाण की इच्छा रखने वाला व्यक्ति चित्तवृत्तियों का निरोध कर समाधि की अवस्था प्राप्त करता है।

Scanned with CamScanner

बुद्ध ने समाधि के चार अवस्थाओं का वर्णन किया है, जिनका वर्णन निम्न है।

(i) समाधि की प्रथम अवस्था में साधक को बुद्ध के आर्य सत्यों का मनन एवं चिंतन करना पड़ता है। यह तर्क एवं वितर्क की अवस्था है। इसमें साधक के मन उत्पन्न संशय का निराकरण किया जाता है।

(ii) समाधि की दूसरी अवस्था में सभी प्रकार के संशय का समाधान हो जाता है। आर्य सत्यों के प्रति श्रद्धा की भावना का विकास होता है। इसमें तर्क-वितर्क की जगह आनन्द एवं शान्ति की अनुभूति होती है।

(iii) समाधि की तीसरी अवस्था में आनन्द एवं शान्ति की चेतना के प्रति उदासीनता का भाव होता है। आनन्द एवं शान्ति निर्वाण प्राप्ति में बाधक प्रतीत होता है इसलिए इस अवस्था में आनन्द एवं शान्ति के चेतना का अभाव रहता है। इसमें केवल शारीरिक आराम का भाव विद्यमान रहता है।

(iv) समाधि की चौथी अवस्था में शारीरिक आराम एवं शान्ति का भाव भी नष्ट हो जाता है। इस अवस्था में मानसिक विकास एवं मन के आनंद की ओर ध्यान नहीं रहता है। इस अवस्था को प्राप्त व्यक्ति को अर्हत कहा जाता है। चित्त वृत्तियों का पूर्णतया निरोध हो जाता है। यह अवस्था सुख दुःखों से परे है। यह निर्वाण की अवस्था है।

Scanned with CamScanner